डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmtjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–20 अप्रैल, 2020)

रामभक्ति काव्यधारा की सामान्य प्रवृत्तियों का उल्लेख

विष्णु के अवतार 'राम' को अपना आराध्य मानकर उपासना करने वाले राम भक्त कवियों को रामभक्ति काव्यधारा के अन्तर्गत माना जाता है। भक्तिकालीन राम काव्य की दो धाराएं हैं। एक हैं ऐष्वर्योपासक मर्यादावादी 'रामभक्ति काव्यधारा और दूसरी है रसिकोपासना की काव्यधारा। ऐष्वर्योपासक मर्यादावादी कवियों में मुख्य हैं– गोस्वामी तुलसीदास (1540ई0–) और केषवदास (1555 ई0–1617 ई0)। रसिकोपासना के कवियों में अग्रदास और नाभादास मुख्य हैं। रसिकोपासना के कवि तुलसीदास के समकालीन थे। इनमें अग्रदास स्वामी रामानंद की षिष्य परंपरा में कृष्णदास परिहारी के षिष्य थे। इनकी 'ध्यानमंजरी', 'कुंडलियां' और 'पदावली' विषेष रूप से प्रसिद्ध हैं। नाभादास ने सन् 1600 ई0 में प्रसिद्ध ग्रंथ 'भक्तमाल' की रचना की, जिसमें 'राम' की रसिक भक्ति का वर्णन किया है। ऐष्वर्योपासक मर्यादावादी 'रामभक्ति काव्यधारा के प्रतिनिध कवि तुलसीदास थे। मर्यादावादी परंपरा में मुख्य रूप से प्रबंध काव्य लिखे गये, जबकि रसिक परंपरा की अधिकांष रचना गेय रूप में है और उनपर कृष्ण काव्य की रसिकता का प्रभाव स्प्ष्ट रूप में दिखता है। ध्यान देने की बात यह है कि भारत की राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ षासन और जीवन की अस्थिरता कृष्ण काव्य और राम काव्य की रचना के समय लगभग समान थी। इसे द्वन्द्वात्मक ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया भी मान सकते हैं। इसके तहत आमलोगों में ईष्वर और आध्यात्मिक चेतना के प्रति अगाध आस्था, विष्वास व निष्ठा का जन्म हुआ।

जिस तरह भगीरथ ने अपने सत्प्रयासों से गंगा की धारा को अपने अनुकूल किया, उसी तरह सूर के बाद तुलसी ने कृष्ण–भक्ति की धारा को रामानुज के विषिष्टाद्वैत से प्रेरणा लेकर रामानंद द्वारा प्रवर्तित वैष्णव संप्रदाय के आधार पर अपने अनुकूल ''रामभक्ति काव्यधारा'' को प्रवाहित किया। सगुण भक्ति काव्यधारा का यह एक टर्निंग प्वाइंट था, जिसका मूल लक्ष्य राम के जीवन में निहित सामाजिक आदर्षों और व्यवस्था को समाज में प्रचार–प्रसार करना था। इसके पीछे 'रामराज्य' की परिकल्पना भी निहित थी।

रामभक्ति काव्यधारा की मुख्य विशेषताएं हैं :– मर्यादावादी रामभक्ति काव्यधारा में तुलसी के प्रबंध काव्य 'रामचरितमानस' का व्यापक प्रभाव है। इसका मुख्य उद्देष्य विभिन्न वैष्णव और षैव संप्रदायों का समन्वय तथा निर्गुण और सगुण की एकरूपता का प्रतिपादन है। रामभक्ति काव्यधारा में तुलसी को छोड़कर अन्य कवि प्रख्यात नहीं हुए। केषवदास अपनी जटिलता और गूढ़ रहस्यात्मकता के कारण 'कठिन काव्य का प्रेत' कहलाए। तुलसी अकेले अपने विराट् व्यक्तित्व से राम काव्यधारा का पूर्ण प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः रामभक्ति काव्यधारा एवं तुलसी के काव्य की सामान्य प्रवृत्तियां लगभग समान हैं।

1. राम का लोकनायक रूप :– रामभक्ति काव्यधारा के कवियों के उपास्य एवं आराध्य विष्णु के अवतार राम हैं। राम के व्यक्तित्त्व में तीन महत्त्वपूर्ण गुणों का व्यापक समन्वय किया गया है– षक्ति, षील और सौंदर्य। इसी तरह उनके चरित्र

में नैतिकता और मर्यादावादी विचारों को गढ़ने कर तुलसी ने जीवन और समाज को एक नयी आस्था–व्यवस्था से जोड़ने का प्रयास किया। युग के कठिन समय में राम इन तथ्यों का पालन समग्रता में करते हैं और उनके आदर्षों से समग्र समाज व्यापक रूप में प्रभावित होता है। असत्य, अधर्म, अत्याचार, अन्याय और दुःख के विनाष के लिए राम का मनुष्य रूप में अवतार राम के लोकरक्षक एवं लोकनायक रूप को दर्षाता है। भारतीय धर्म परंपरा में यह माना गया है कि जब–जब अन्याय और अत्याचार बढ़ेगा तब–तब ईष्वर का अवतार किसी न किसी रूप में होना तय माना जाता है। रसिक काव्यधारा में राम का लोकरंजक रूप मिलता है, किन्तु उसका न तो भक्ति की दृष्टि से और न ही साहित्य की दृष्टि से उतना महत्त्व है।

षक्ति, षील और सौंदर्य के साथ मर्यादा की प्रतिष्ठा राम काव्यधारा का प्रचलित स्वरूप है। तुलसी के समय के लोक में जीवन और सामाजिक मर्यादा को स्थापित करना अनिवार्य हो गया था। समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, दुराचार, दुःख और पीड़ा को संतुलित करने हेतु षक्ति, षील और सौंदर्य के साथ मर्यादा की प्रतिष्ठा एक लोक कवि के लिए आवष्यक हो गया था। 'नर में नारायण' की परिकल्पना कर के तुलसी ने राम को लोकनायक के साथ ब्रह्म स्वरूप में उपस्थित किया है। इस संदर्भ में रामचंद्र षुक्ल ने कहा कि ''लोक में फैली दुःख की छाया को हटाने में ब्रह्म की आनन्दकला, जो षक्तिमय रूप धारण करती है, उसकी भीषणता में भी अद्भुत मनोहरता, कटुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडता में गहरी आद्रता, साथ लगी रहती है।'' इस प्रकार राम लोक के लिए 'लोकरक्षक', 'मर्यादा पुरुषोत्तम', 'व्यापक आदर्ष के प्रतिष्ठापक' और 'लोकमंगल विधायक' के रूप में हैं।

2. <u>समन्वयवादी भावना</u> :– रामभक्ति काव्य में समन्वय की विराट् चेष्टा की गयी है। रामकाव्य ज्ञान और भक्ति, निर्गुण और सगुण, षैव और षाक्त, द्वैत और अद्वैत, राम और षिव, स्वामी और सेवक, भक्त और भगवान, राजा और प्रजा, पिता और पुत्र, गुरु और षिष्य तथा विविध परस्पर रिष्तों में समन्वय व्यापक एवं विरल ही नहीं बल्कि विष्व साहित्य में अमूल्य धरोहर है। निर्गुण–सगुण के समन्य का एक चित्र है :

'अगुन सगुन दुई ब्रह्म स्वरूपा'। अकथ अगाध अनादि अनूपा।'

इसी प्रकार विभिन्न विरोधी तत्वों में समन्वय करते हुए तुलसी ने लिखा है–

ज्ञानहि भगतहि नहीं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा।
परहित सरिस धरम नहीं भाई । पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।
सरजू नाम सुमंगल मूला । लोक वेदमत मंजूल कूला।

इस प्रकार हम हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार कह सकते हैं कि ''तुलसी का संपूर्ण काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है'' और यह चेष्टा अपने युग की विषिष्ट परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए तुलसी ने षाष्वत जीवन और मानवताबोध के लिए अभिव्यक्त किया है।

3. <u>लोकमंगल की भावना</u> :– रामभक्ति काव्य की एक महत्त्वपूर्ण विषेषता है– लोकमंगल की भावना का प्रसार। तुलसी के रामचरितमानस की रचना 1574 ई0 में हुई थी।

यह रचना समग्रता में लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत है। उन्होंने लोक को ध्यान में रखकर आदर्श चरित्रों को प्रतिष्ठित किया है। इसमें रिष्तों के आदर्श स्वरूप का निरूपण भी हुआ है। स्वयं राम पूर्ण मर्यादित एक आदर्श राजा है। राम ने सामाजिकों के बीच अपने माता–पिता के समक्ष पुत्र का और भाईयों के बीच बड़ा भाई होने का आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी पत्नी सीता के लिए एक आदर्श पति का निर्वाह किया। लक्ष्मण छोटा भाई होने का और हनुमान एक आदर्श सेवक का निर्वाह किया है और सुग्रीव आदर्श सखा के रूप में तथा जाम्बवन्त गुरु के रूप में चित्रित है। इस प्रकार लोकमंगल से प्रेरित उनका ' रामचरितमानस' लोक और समाज का हितैषी और भक्तिभावना के संचार का आधार बना। तुलसी के लोकमंगलकारी भावना के कुछ चित्र प्रस्तुत है–

1. 'दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा।'
2. 'सब नर करहिं परस्पर प्रीति। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।'
3. 'सुन जननी सोई सुत बड़ भागी। जो पितु मातु चरन अनुरागी।'

4. <u>भक्ति भावना</u> :– रामभक्ति काव्यधारा में तुलसी ने विभिन्न भावों में अपनी भक्ति धारा प्रवाहित की है। 'रामचरितमानस' और 'विनयपत्रिका' भक्तों का कंठहार है। इनमें दास्य भक्ति भावना अर्थात् स्वामी–सेवक भाव की भक्ति भावना का संचार मिलता है। राम के चरित्र के माध्यम से उन्होंने जिस भक्ति भाव को व्यंजित किया है, वह समाज के लिए एक मिसाल है। भक्त और भगवान के बीच की दूरी कभी समाप्त हो जाती है तो कभी दास भाव में बनी रहती है। उन्होंने लिखा है–

सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगारि।

राम काव्यधारा में कवियों ने 'नवधा भक्ति' को अपना आधार बनाया है, जिसमें लघुता, दैन्य, उदारता, आदर्षवादिता, नम्रता आदि भावों की प्रधानता दिखलायी पड़ती है। एक चित्र प्रस्तुत है–

रामसों बड़ो है कौन। मोसों कौन छोटो।
रामसों खरौं है कौन। मोसों कौन खोटो।।

5. <u>नारी भावना</u> :– प्रायः लोगों में यह धारणा रही है कि तुलसी नारी के घोर निंदक हैं और उनकी भावना नारी के खिलाफ है। नारी के खिलाफ को पुष्ट करने के लिए प्रायः लोग इस पंक्ति का प्रयोग करते हैं– 'ढ़ोल–गँवार–षूद्र–पषु–नारी/ये सब ताड़न के अधिकारी।' किन्तु यदि वे नारी के खिलाफ होते तो नारी की स्वतंत्रता के लिए व्यग्र–बेचैन दिखायी नहीं पड़ते। नारी की स्वतंत्रता के समर्थन में उनकी पंक्ति है–

'कत विधि सूनी नारि जग माहिं।
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।।'

इस प्रकार रामभक्ति काव्यधारा की अन्य विषेषताओं में मानव मूल्यों की स्थापना, रस–निरूपण, अभिव्यंजना सौंदर्य आदि भी महत्त्वपूर्ण हैं। वे रससिद्ध कवि के रूप में ख्यात हैं, किन्तु उनकी मूल चेतना समन्वयवादी है। भारतीय जीवन, समाज, धर्म व संस्कृति में समन्वयवादी चेतना का व्यापक महत्त्व है। तुलसी ने निर्गुण, सगुण, षैव, वैष्णव, ज्ञान, भक्ति, निवृत्ति, प्रवृत्ति संबंधी दृष्टिकोणों को समन्वित करके जीवन का एक स्वस्थ एवं परिमार्जित रूप प्रस्तुत किया है, जो भारतीय समाज और राष्ट्र के लिए महत्त्वपूर्ण है।

दिनांक : 20/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**